मास्को
२२ मई, २००६

संदेश संख्या – ६२

सफलता, स्वार्थपरायणता एवं पवित्रतम की सूक्ष्मानुभूति

फरवरी २००६ के अन्तिम सप्ताह में बुल्गारिया के प्लोबोदीव नगर में शिवेन्दु के शरीर से हो रहे कुछ स्वतः स्फूर्त उद्‌गारों ने बुल्गारिया के क्रियावानों के हृदय को छू लिया । उनलोगों ने सुझाव दिया कि ये बातें एक संदेश के रूप में वेबसाइट पर आनी चाहिए । चूँकि सभी उद्‌गार पूर्ण रिक्तता से निलकते हैं, अतः उन्हें एक संदेश के रूप में लिखना तब तक सम्भव नहीं था, जब तक उस सत्संग के ध्वन्यालेखन (Recording) को वक्ता के पास नहीं भेजा जाता । वर्तमान में यह शरीर सायटिका की तीव्र पीड़ा से गुजर रहा है और कुछ विश्राम में है । इसलिए इस संदेश को बुल्गारिया से मिले आलेख (Script) में कुछ संशोधन के बाद रूस के क्रियावानों द्वारा वेबसाइट पर डाला जा रहा है ।

किसी दिन संयोगवश सी एन एन चैनल पर दिखाये जा रहे एक मोहक विज्ञापन पर शिवेन्दु की नजर पड़ी। उसमें न्यूयार्क के सर्वाधिक रईस इलाके वाले चमचमाते एवं गगनचुम्बी इमारतों को दिखाया जा रहा था। तभी एक बहुत बड़ी कार से कीमती पोशाक पहने एक व्यक्ति बड़े स्टाइल से बाहर निकला । वह व्यक्ति एक शानदार लिफ्ट से अपने कार्यालय तक गया। वह मालिक की कुर्सी पर बैठा, तब कई लोगों ने आकर उसका अभिवादन किया और उसने उन्हें निर्देश देना शुरु किया । उसके अधीनस्थ अधिकारी भयभीत होकर इधर–उधर दौड़ने लगे क्योंकि उन निर्देशों को कुशलता पूर्वक तत्काल पूरा करना था अन्यथा उन्हें काम से निकाल दिया जाएगा । और तब वह मालिक एक बड़ी मुस्कान के साथ कहता है, मेरा पुत्र मेरी इस कम्पनी में उपाध्यक्ष (Vice Chairman) था फिर भी, मैंने उसे निकाल दिया क्योंकि मैंने उसे अयोग्य पाया। मैंने उसे कहा–'' तुम काम छोड़ कर चले जाओ क्योंकि तुम्हें निकाल दिया गया है।'' फिर उसने गर्वपूर्वक कहा–''देखो, मैंने अपने पुत्र को ऐसा कहा।'' इसके बाद विज्ञापन में दिखाता है कि वह एक विशि हवाईजहाज से सम्पूर्ण विश्व का भ्रमण करता है जिसमें केवल विलासिता से पूर्ण प्रथम श्रेणी है। उसमें अन्य बिजनेस श्रेणी या किफायत (इकोनोमी) श्रेणी नहीं है। शानदार सजावट वाले उस जहाज में उसे महान शैली में सोते हुए दिखाया गया। प्रत्येक देश में अरबपति लोगों द्वारा उसका स्वागत होता है तथा मुख्य समाचार पत्रों के सम्पादकों द्वारा उसके स्वागत में कहा जाता है, ''हम जानते हैं कि आप बहुत बड़े व्यक्ति हैं, आप सैकड़ों अरब डालर के मालिक हैं । आप बहुत महान हैं ।'' इन सब के बाद, विज्ञापन के अन्त में एक बड़ा शीर्षक दिखाया गया ''सफलता की सम्मोहक सुगंध का मजा लें ।'' और तभी शिवेन्दु के शरीर में एक अद्‌भुत घटना घटी । अचानक शिवेन्दु को वाराणसी (भारत) की छोटी गली में घूमता एक कुत्ता याद आ गया । वाराणसी की गलियों में कई प्रकार के मल चारों तरफ बिखरे होते हैं । उनमें मनुष्यों के मल भी होते हैं क्योंकि वहाँ कुछ लोग आश्रय–विहीन होते हैं जिनके पास शौचालय की सुविधा भी नहीं होती । वह कुत्ता विभिन्न प्रकार के मलों को सूँघने तथा जाँचने के बाद सबसे स्वादि मल को बड़े आनन्द से खाने लगा । यहाँ कुत्ते ने शरीर के सूंघने के इन्द्रियबोध को वर्गीकृत किया और इस वर्गीकरण के बाद वह सबसे सुबासित मल का स्वाद लेने लगा। जबकि उस अरबपति व्यक्ति के पास जो कुछ भी उपलब्ध था उसे उसकी चित्तवृत्ति ने शरीर के इन्द्रियबोध को सफलता की मोहक सुगंध के रूप में वर्गीकृत किया और इसी कारण अपनी काल्पनिक आत्मतुष्टि हेतु वह सफलता की मोहक सुगंध का मजा ले रहा है । पूर्ण जागृति (सचेतनता) अर्थात् शून्यता के आयाम में, कुत्ते द्वारा मल के गंध का मजा लेने और अरबपती व्यक्ति द्वारा सफलता की सुगंध का मजा लने के बीच कोई अन्तर करना सम्भव नहीं है । किन्तु एक को तिरस्कारपूर्वक DOG कहा जाता है जबकि दूसरे को

इसके विपरीत GOD के रूप में पूजा जाता है । इसका कारण है कि प्रत्येक धर्म के पुरोहितों द्वारा धन–शक्ति को ईश्वरीय गुप्त–शक्ति कहा जाता है ।

अब महत्वपूर्ण बात यह है कि वाराणसी की छोटी गली का यह कुत्ता इस पृथ्वी का ध्वंस नहीं करेगा किन्तु सी.एन.एन. का यह भगवान अपनी उच्चाकांक्षा एवं लोभ के कारण कर सकता है और उसी उच्चाकांक्षा एवं लोभ को सफलता के रूप में पूजा जाता है। वस्तुतः ऐसे लोग ही अपने धन–बल एवं छल से प्रत्येक देश के राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री का निर्धारण करते हैं ताकि उनकी सफलता का दौर अबाधित रूप से जारी रह सके। यह व्यक्ति चर्च जाता है और ईश्वर से प्रार्थना भी करता है क्योंकि ईश्वर ही शायद उसका चरम लोभ है । उसका 'ईश्वर' पृथ्वी के विनाश में उसकी मदद करता है क्योंकि दुर्भाग्य से ऐसा 'ईश्वर' ऐसे लोगों का क्रीत–दास ही होता है । जीवन के रूप में ईश्वर इस पृथ्वी की रक्षा करते हैं जबकि मन में रूप में इसका संहार करते हैं । उस ईश्वर का धन्यवाद है जो कुत्ते में है, परन्तु लोभ उत्पन्न करने वाले ईश्वर का धिक्कार है। अतः चित्तवृत्ति से मुक्त ईश्वर का आह्वान करें और चित्तवृत्ति के विभाजनों से निर्मित ईश्वर से दूर रहें ।

अब अरबों–खरबों डॉलर का मालिक यह व्यक्ति ६० मनुष्यों को अत्यन्त दरिद्रता में जीने के लिए विवश कर रहा है परन्तु मन द्वारा निर्मित एवं समाज द्वारा स्वीकृत ईश्वर तथा पुरोहितों द्वारा पूजा जानेवाला 'ईश्वर' उस व्यक्ति को 'सफलता की सुगंध का मजा लेने' में मदद करता है जब कि अनाम, असीम और पवित्रतम की सूक्ष्मानुभूति की किसी को कोई खबर ही नहीं । ऐसा व्यक्ति यह दावा करता है कि वह गरीबी दूर करना चाहता है जबकि वास्तविकता में, वह गरीबों का सफाया चाहता है ।

धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं अन्य सभी व्यवस्थायें लोभी मन एवं भयंकर अहंकार की ऊपज हैं जो मानव संबंधों के प्रत्येक स्तर पर द्वन्द्व पैदाकर सामान्य लोगों का निर्दयतापूर्वक सर्वनाश करने में ऐसे धनवान लोगों की मदद करती हैं । कोई भी राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, पोप, परमहंस, रब्बी, मुल्लाह, गुरु एवं गिरि इस गहरी शिक्षा को जीवन के आयाम में नहीं सुनता बल्कि लोभ और मन के आयाम में ही सुनता है । वे मन के आडम्बरों एवं अहंकार की विकृतियों से उत्पन्न अवधारणाओं तथा उधार में लिए गए विचारों द्वारा इस पृथ्वी का विनाश करने के लिए कृतसंकल्प हैं । केवल तुम क्रियावानों के जैसा सीधा–सादा एवं साधारण लोग ही शायद सुनेंगे !

अतः भगवान के लिए सुनें ।